राजभाषा अनुभाग

राजभाषा उत्सव-2023 के अवसर पर आयोजित विभिन्न प्रतियोगिताओंके विजेताओं को प्रमाण-पत्रों का वितरण श्युवा दिवसश केअवसर पर आयोजित समारोह में किया गया। उल्लेखनीय है कि सितंबर माह में आयोजित राजभाषा उत्सव- 2023 के अंतर्गतसुलेख प्रतियोगिताए निबंध प्रतियोगिताए कार्यालयीन-पत्र लेखन प्रतियोगिताए तात्कालिक भाषण प्रतियोगिताए प्रेरक-प्रसंगप्रतियोगिताए स्वरचित कविता पाठ प्रतियोगिता और वर्तनी लेखन प्रतियोगिताओं आदि का आयोजन विद्यार्थियों और कार्मिकों हेतुकिया गया था।पुरस्कार राशि क्रमशः प्रथम ₹2500ध्द द्वितीय ₹2000ध् तृतीय ₹1500ध् सांत्वना ₹1200ध् रही।

कार्यक्रम के आरंभ में गांधी विचार एवं शांति अध्ययन संस्थान के निदेशक और राजभाषा कार्यान्वयन समिति के संयोजक प्रो. संतोष भदौरिया ने सभी का स्वागत करते हुए कहा कि राजभाषा अनुभाग राजभाषा हिंदी के रचनात्मक प्रयोग और उसके प्रचार-प्रसार के प्रति सजग है।राजभाषा अनुभाग अपने कार्यक्रमों के माध्यम से सभी संकायों के विद्यार्थियों और कार्मिकों की सक्रियसहभागिता और हिंदी भाषा के अधिकाधिक प्रयोग के प्रति प्रतिबद्ध है।जिसका सकारात्मक परिणाम है कि युवा दिवस के अवसर पर इतनी बड़ी संख्या में विद्यार्थी और कर्मचारी उपस्थित हैं।इसी सहभागिता को दृष्टिगत रखते हुए राजभाषा अनुभाग विभिन्न प्रकार की प्रतियोगिताएंए कार्यशालाएं और सांस्कृतिक कार्यक्रम अपने विद्यार्थियों और कर्मचारियों को केंद्र में रखकर पूरे वर्ष आयोजित करता है।

कार्यक्रम के मुख्य अतिथि विज्ञान संकाय के डीन प्रो. बेचैन शर्मा ने कि कहा कि पुरस्कार जीतना तो अपने आप में बड़ा है ही साथ ही उतना ही बड़ा है इस तरह की प्रतियोगिताओं में प्रतिभा करना। हमें इस तरह की सांस्कृतिक गतिविधियों की प्रतियोगिताओं में प्रतिभाग अवश्य करना चाहिए।इस तरह के आयोजनों से हमें युवा पीढ़ी के हिंदी प्रेम और उसके प्रयोग की सटीक जानकारी मिलती है।

कार्यक्रम के अतिथि हिंदी एवं आधुनिक भारतीय भाषा विभाग इलाहाबाद विश्वविद्यालय की सह- आचार्य डॉ. बसंत त्रिपाठी ने कहा की आजादी के दौर से ही हिंदी हमें एक दूसरे के नज़दीक लाती रही है । हिंदी ही वह भाषा थी जो राष्ट्रीय आंदोलन में हमें बांधे हुई थी।

इलाहाबाद विश्वविद्यालय की जनसंपर्क अधिकारी प्रो. जया कपूर ने कहा आज तकनीक के दौर में राजभाषा कार्यान्वयन को और गति मिली है । इस तरह की प्रतियोगिताएं हमें भाषा के प्रति हमारी समझ को बढ़ाती हैंए हमारी बोलचाल की भाषा को ठीक करती हैं । हमें सरल सहज शब्दों का प्रयोग अपनी भाषा में करना चाहिएए जिससे के सामने वाला व्यक्ति सही तरीके से हमारी बात को समझ सके। कार्यालयीन भाषा में भी ऐसे शब्दों का प्रयोग करना चाहिए जिससे वह सहज और सरल लगे।

इलाहाबाद विश्वविद्यालय के कुलसचिव एवं राजभाषा कार्यान्वयन समिति के अध्यक्ष प्रो. नरेंद्र कुमार शुक्ल ने कहा हिंदी में कामकाज करना हमारी विधिक और संवैधानिक जिम्मेदारी के साथ-साथ नैतिक जिम्मेदारी भी है। हम कक्षेत्र में आते हैं और कक्षेत्र में आने के कारण हमें हिंदी के प्रचार -प्रसार को शत- प्रतिशत करना है। यह सुखद है कि हमारा राजभाषा अनुभाग कार्मिकों के लिए विभिन्न कार्यशालाएं तो आयोजित करता ही है बल्कि अपने विद्यार्थियों के लिए रचनात्मक प्रतियोगिताएं भी आयोजित करता रहता है। प्रत्येक वर्ष लगभग डेढ़ से दो लाख रुपये विद्यार्थियों और कर्मचारियों को पुरस्कार के रूप में दिए जाते हैं । कार्यक्रम का संचालन राजभाषा अनुभाग के अनुवाद अधिकारी श्री हरिओम कुमार ने किया तथा धन्यवाद ज्ञापन हिंदी अधिकारी श्री प्रवीण श्रीवास्तव ने किया।